केस स्टडी

नंबर 1

गाँव के लोग ही मेरे प्रेरणा स्रोत हैं

नामः आसरेन करकेट्टा

उम्रः 50 वर्ष

मुखियाः 2010 से

शिक्षाः 12वीं तक, शिक्षक प्रशिक्षण

अनुभवः 2010.–15 मुखिया के रूप में

ग्राम पंचायतः कुंजूबा

पंचायत समितिः केरसाई

जिलाः सिमडेगा

राज्यः झारखण्ड

कुंजूबा ग्राम पंचायत की मुखिया आसरेन करकेट्टा में नेतृत्व क्षमता भरी पड़ी है। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि गाँव के लोगों ने उनके काम पर विश्वास किया और उन्हें सहयोग देकर अपने ग्राम पंचायत में दूसरी बार मुखिया बनाया है। दोपहर में लगभग 2.30 बजे विकास खण्ड स्तर पर आयोजित मुखिया लोगों की बैठक से निकलने के बाद उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाते हुए स्वागत किया। झारखण्ड के सिमडेगा जिले के केरसाई प्रखण्ड के किसी मुखिया से इस प्रकार स्वागत किया जाना अचरज और खुशी की बात थी।

ग्राम पंचायत भवन में बैठकर विस्तार से अपने बारे में बताते हुये आसरेन करकेट्टा ने कहा कि 2010 में उनके पति, जो कि एक इंस्पेक्टर थे, का निधन हो गया। ऐसे में उनके साथ केवल दो बेटे ही रह गये थे (वर्तमान में बड़ा बेटा सिविल इंजीनियर है और छोटा बेटा बी0काम0 की पढ़ाई कर रहा है)। पति की मौत के कुछ ही दिन बाद राज्य में ग्राम पंचायत के लिये चुनाव होने वाले थे। ऐसे में उनके देवर और गाँव में आस–पास के लोगों ने उन्हें यह कह कर चुनाव लड़ने के लिये प्रेरित किया कि 'कुछ काम करने के लिये मिल जायेगा तो मन लग जायेगा और कुछ पति के पेंशन के अलावा कुछ पैसे मिल जायेंगे तो बच्चों की पढ़ाई में मदद मिल जायेगी'। याद करते हुये आसरेन बताती हैं कि उस चुनाव में ग्राम पंचायत के मुखिया की सीट आरक्षित नहीं थी। लोगों की सलाह के आधार पर आसरेन करकेट्टा ने चुनाव लड़ा और जीत भी गयीं।

अपने पहले पाँच साल के कामों को याद करते हुये आसरेन बताती हैं कि पहले उन्हें सरकार की बहुत सी योजनाओं की जानकारी नहीं थी और उनके ग्राम पंचायत को बहुत अधिक वित्तीय संसाधन नहीं मिले थे लेकिन उन्होंने ग्राम पंचायत के विकास के लिये उनका अच्छे से उपयोग किया। आसरेन बताती है कि गाँव में पीने के पानी की समस्या को सबसे पहले लिया गया और प्रखण्ड स्तर पर अधिकारियों से बात करके पानी की टंकी का निर्माण कराया गया। इससे लोगों को पीने का पानी मिलने लगा है।

दूसरे कार्यकाल के दौरान आसरेन करकेट्टा ने लगभग 100 परिवारों के घरों में शौचालय बनवाने का भी काम करवाया है। सरकार की योजना के अनुसार आसरेन ग्राम पंचायत के वार्ड मेंबरों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित कर रहीं हैं कि कोई भी बच्चा/बच्ची स्कूल जाने से छूट न जाय। उनके गाँव को दूसरे गाँवों और बाजार से जोड़ने के लिये गाँव में बहने वाले नाले के ऊपर पुल का निर्माण उनकी प्राथमिकताओं में से एक है। उनके अनुसार बरसात के दिनों में जब लोग वहाँ से गुजरते हैं तो उनके बारे में कहते हैं कि 'दो बार मुखिया बन गयी लेकिन पुलिया नहीं बनवा पाई'। आसरेन बताती हैं कि पुलिया निर्माण के काम को ग्राम पंचायत ने स्वीकृति दे दी थी किन्तु ऊपर से स्वीकृति नहीं मिलने के कारण काम नहीं हो पाया। वह चाहती हैं कि उनके ग्राम पंचायत में गाँव के हर परिवार को मिलने वाले लाभों के बारे में सभी को जानकारी दी जाय।

आसरेन कहती है कि दूसरी बार के चुनाव में वह उम्मीदवार नहीं बनना चाहती थी क्योंकि अपने घर में वह अकेली महिला हैं। उनके बेटे घर से दूर हैं लेकिन घर में उनके ससुर और भतीजे साथ रहते हैं। लेकिन मुखिया के तौर पर उनके पिछले पाँच साल के कामों और गाँव के लोगों के साथ संबंधों के कारण लोगों ने उन्हें फिर से चुनाव लड़ने के लिये कहा। उनके अनुसार लोगों का मानना है कि मैं हमेशा उनकी जरूरतों में साथ रहती हूँ (आपसी विवादों में या जहाँ पुलिस की जरूरत पड़ती है)। आसरेन करकेट्टा के गाँव के लोगों के साथ संबंध अच्छे होने का सबूत इस बात से मिला गाँव में उनके साथ घूमते हुये लोगों ने उन्हें देखकर खुशी जाहिर की और मुस्कुराहट के साथ उनका अभिवादन और स्वागत किया। अपने दूसरे कार्यकाल में आसरेन गाँव के जरूरतमंद लोगों की मदद करने के साथ ही बूढ़े लोगों के लिये कुछ अच्छा काम करना चाहती हैं।

सौर उर्जा चालित सामुदायिक पेयजल योजना

कुंजूबा में ग्राम पंचायत डेवलपमेन्ट प्लान के बारे में बताते हुये आसरेन कहती हैं कि योजना बनाने से 10 दिन पहले उन्होंने खुद गाँव के लोगों को योजना निर्माण की खबर दी थी। ग्राम पंचायत की योजना को लोगों के साथ मिलकर बनाया गया है और उसे प्रखण्ड कार्यालय में जमा भी करा दिया गया है। उनके अनुसार ग्राम पंचायत में महात्मा गाँधी ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना के अन्तर्गत भी कुछ काम कराये गये हैं। इसी प्रकार गाँव में आंगनबाड़ियों के सही तरीके से संचालन के लिये भी नियमित प्रयास किया जा रहा है।

अपने गाँव की समस्याओं को गिनाते हुये आसरेन ने बताया कि लोगों में नशे की आदत होना एक बड़ी समस्या है। अपना व्यक्तिगत काम न होने पर नशा करने वाले लोग सामने से गुजरते हुए अपशब्द कहते हैं। आसरेन कहती हैं लोगों के अपशब्दों पर ध्यान न देते हुये वह अपने कामों को अच्छे से करने की कोशिश करती हैं। उनके अनुसार 'लोग यह नहीं समझते है कि मुखिया का काम समस्याओं के अनुसार लोगों की जरूरतों को ऊपर के अधिकारियों को बताने का अधिकार है, उन्हें पूरा करने का नहीं।'

चर्चा के दौरान आसरेन ने बताया कि अपने स्कूली शिक्षा के दौरान ही उनका रूझान राजनीति की ओर हुआ जिससे उनमें नेतृत्व करने का गुण आने लगा था। 12वीं तक की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने शिक्षक प्रशिक्षण का कोर्स किया जिससे उनके आत्मविश्वास के साथ बोलने की कला बढ़ी। शादी के बाद अपने पति के साथ उन्हें जमशेदपुर और हैदराबाद जैसे शहरों में रहने का मौका मिला और उस दौरान उन्हें बहुत से सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिला जिससे उनका आत्म विश्वास और बढ़ा।

ग्राम पंचायत में नाली निर्माण का काम

अपने दूसरे कार्यकाल में जुलाई से अक्टूबर 2016 के दौरान आसरेन करकेट्टा को राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, रांची में कुछ प्रशिक्षण दिया गया है जिससे उन्हें सरकार की योजनाओं, पंचायत में विकास के कामों, उनसे संबंधित दस्तावेजों के रख–रखाव इत्यादि के बारे में जानकारी दी गयी। उनके अनुसार इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किये जाने चाहिये जिससे मुखिया लोगों को सभी नयी जानकारियाँ समय पर मिल सकेंगी और उनके द्वारा अपने गाँव–विकास के कामों को और बेहतर ढ़ंग से किया जा सकेगा।